सत्र –2024–25

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर(म.प्र.)

दो वर्षीय पाठ्यक्रम

Marking Scehme

Diploma In Performing art (D.P.A.)

Vocal/Instrumental (Non percussion)

IInd Year Diploma Course

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NON PERCUSSION)	MAX	MIN
2	Theory - Applied principles of music	100	33
3	PRACTICAL- Raga description viva	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

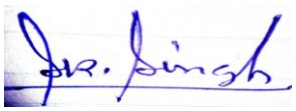

Diploma In Performing art (D.P.A.)
Vocal/Instrumental (Nonpercussion)
IInd Year Diploma Course
सैद्धांतिक–प्रथम प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक :– 100

न्यूनतम :– 33

1. ध्वनि (सांगीतिक ध्वनि और शार), नाद और उसके प्रकार, नाद की तीव्रता, तारता।सेमी टोन माईनर टोन, मेजर टोन का परिचय।
2. हिन्दुस्तानी और कनार्टक स्वर सप्तकों का अध्ययन। ग्रह आदि दस राग लक्षणों का परिचय।
3. गाधंर्व गान एवं मार्ग–देशी का सामान्य परिचय। निबद्ध एवं अनिबद्ध गान की सामान्य जानकारी।
4. थाट, राग वर्गीकरण का सामान्य परिचय। शुद्ध, छायालग एवं सकीर्ण रागों का अध्ययन।
5. गणितानुसार हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के 32 और कनार्टक संगीत पद्धति के 72 मेलों की निर्माण विधि। स्वरों की संख्या के आधार पर एक थाट से 484 राग बनाने की विधि।
6. ग्राम और मूर्च्छना के लक्षण एवं भदों की सामान्य जानकारी।
7. पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर स्वरलिपि पद्धति की जानकारी।
8. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :–राग–छायानट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा, सोहनी।
9. निम्नलिखित अ एवं ब को भातखण्ड स्वरलिपि पद्धति मे लिखने का अभ्यास।

   (अ) पाठ्यक्रम के किन्हीं 5 रागों मे विर्लाम्बत रचना (बडा ख्याल), मसीत खानी गत को आलाप तानों सहित लिखन का अभ्यास। किसी ध्रुपद अथवा धमार को दुगुन, चौगुन सहित लिखना अथवा किसी तरान को लिखने का अभ्यास।

   (ब) पाठ्यक्रम के रागों में से मध्यलय रचना (छोटा ख्याल), रजाखानी गत को स्वरताल लिपि में लिखने का अभ्यास। (आलाप, तानों सहित।)

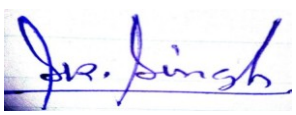

(स) किसी भजन अथवा धुन को तालस्वर लिपि में लिखना।

10 . पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :–राग–छायानट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा, सोहनी।

11 . निम्नलिखित अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

(अ) पाठ्यक्रम के किन्हीं 5 रागों मे विर्लाम्बत रचना (बडा ख्याल), मसीत खानी गत को आलाप तानों सहित लिखन का अभ्यास। किसी ध्रुपद अथवा धमार को दुगुन, चौगुन सहित लिखना अथवा किसी तरान को लिखने का अभ्यास।

(ब) पाठ्यक्रम के रागों में से मध्यलय रचना (छोटा ख्याल), रजाखानी गत को स्वरताल लिपि में लिखने का अभ्यास। (आलाप, तानों सहित।)

12 . आड़, कुआड, बिआड, की परिभाषा एवं अर्थ। तीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल, एकताल के ठेकों को आड, दुगुन, चौगुन की लयकारी में लिखने का अभ्यास।

13 . संगीत से संबंधित विविध विषयों पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लेखन।

14 . दजीवन परिचय एवं सांगीतिक योगदान :–सदारंग–अदारंग,, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, डॉ. एन. राजम, पं. ओमकार नाथ ठाकुर।

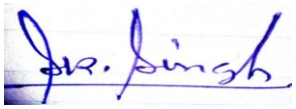

सत्र – 2024–25

Diploma In Performing art (D.P.A.)
Vocal/Instrumental (Nonpercussion)
IInd Year Diploma Course
प्रायोगिक :– 1 प्रदर्शन एवं मौखिक

समय : 3 घण्टे | पूर्णांक – 100
न्यूनतम – 33

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के राग : छायानट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा एवं साहिनी।
2. पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका एवं लक्षणगीत का गायन। (गायन के परीक्षार्थियों के लिये।)
3. पाठ्यक्रम के किन्हीं 5 रागो में विर्लाम्बत रचना (बडा ख्याल), विर्लाम्बत गत (मसीतखानी) का आलाप तानों सहित प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के 7 रागों में मध्यलय रचना (छोटा ख्याल), मध्य लय गत (रजाखानी) का तानों सहित प्रदशन।
5. पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद अथवा धमार (दुगनु, तिगुन, चौगुन सहित प्रदर्शन।) दो तराने एवं एक भजन की प्रस्तुति। (गायन के परीक्षार्थियों के लिये।) अपने वाद्य पर तीन ताल के अतिरिक्त अन्य किसी ताल में दो गतों का प्रदर्शन तानों सहित। किसी धुन का प्रदर्शन (वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये)।
6. पाठ्यक्रम के तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगनु, तिगुन, चौगुन सहित प्रदर्शन।

सदंर्भग्रंथ:

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णुनारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांतिगोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका – श्रीभगवतशरण शर्मा
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा
7. संगीतबोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग